रविवार 25 अगस्त, 2019

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: II तीमुथियुस 1 : 7

"क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।"

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 43 : 1-5, 7

1 सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम ले कर
बुलाया है, तू मेरा ही है।
2 जब तू जल में हो कर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में हो कर चले, तब वे तुझे न डुबा
सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।
3 क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूं, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूं।
4 मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है और मैं तुझ से प्रेम रखता हूं, इस कारण मैं तेरी सन्ती
मनुष्यों को और तेरे प्राण के बदले में राज्य राज्य के लोगों को दे दूंगा।
5 मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं;
7 हर एक को जो मेरा कहलाता है, जिस को मैं ने अपनी महिमा के लिये सृजा, जिस को मैं ने रचा और
बनाया है॥

पाठ उपदेश

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

बाइबल

1. भजन संहिता 34 : 17, 22

17 धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उन को सब विपत्तियों से छुड़ाता है।
22 यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर बचा लेता है; और जितने उसके शरणागत हैं उन में से कोई भी दोषी न ठहरेगा॥

2. यिर्मयाह 29 : 11-13

11 क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानी की नहीं, वरन कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा।
12 तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा।
13 तुम मुझे ढूंढोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।

3. I कुरिन्थियों 10 : 13

13 हम तो सीमा से बाहर घमण्ड कदापि न करेंगे, परन्तु उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिये ठहरा दी है, और उस में तुम भी आ गए हो और उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगे।

4. मत्ती 4 : 23 (*से 1st* ,), 24

23 और यीशु सारे गलील में फिरता,
24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।

5. लूका 8: 26 (*से 1st* ,), 27-33, 35 (*से* :)

26 फिर वे गिरासेनियों के देश में पहुंचे, जो उस पार गलील के साम्हने है।

27 जब वह किनारे पर उतरा, तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिस में दुष्टात्माएं थीं और बहुत दिनों से न कपड़े पहिनता था और न घर में रहता था वरन कब्रों में रहा करता था।
28 वह यीशु को देखकर चिल्लाया, और उसके साम्हने गिरकर ऊंचे शब्द से कहा; हे परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु, मुझे तुझ से क्या काम! मैं तेरी बिनती करता हूं, मुझे पीड़ा न दे!
29 क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था, इसलिये कि वह उस पर बार बार प्रबल होती थी; और यद्यपि लोग उसे सांकलों और बेडिय़ों से बांधते थे, तौभी वह बन्धनों को तोड़ डालता था, और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाये फिरती थी।
30 यीशु ने उस से पूछा; तेरा क्या नाम है? उसने कहा, सेना; क्योंकि बहुत दुष्टात्माएं उसमें पैठ गईं थीं।
31 और उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे।
32 वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, सो उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें उन में पैठने दे, सो उस ने उन्हें जाने दिया।
33 तब दुष्टात्माएं उस मनुष्य से निकल कर सूअरों में गईं और वह झुण्ड कड़ाडे पर से झपटकर झील में जा गिरा और डूब मरा।
35 और लोग यह जो हुआ था उसके देखने को निकले, और यीशु के पास आकर जिस मनुष्य से दुष्टात्माएं निकली थीं, उसे यीशु के पांवों के पास कपड़े पहिने और सचेत बैठे हुए पाकर डर गए।

6. मत्ती 17 : 14-21

14 जब वे भीड़ के पास पहुंचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेक कर कहने लगा।
15 हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर; क्योंकि उस को मिर्गी आती है: और वह बहुत दुख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है।
16 और मैं उस को तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।
17 यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगों मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ।
18 तब यीशु ने उसे घुड़का, और दुष्टात्मा उस में से निकला; और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया।
19 तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा; हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?
20 उस ने उन से कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह स को गे, कि यहां से सरककर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये अन्होनी न होगी।
21 जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा।

7. यूहन्ना 8 : 31, 32

31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो
सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

8. I कुरिन्थियों 6 : 19 (जानना), 20

19 ...क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें
परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?
20 क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥

9. रोमियो 12 : 1, 2

1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को
जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा
है।
2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी
बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते
रहो॥

10. II कुरिन्थियों 5 : 17

17 सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 209 : 5-8

मन, अपने सभी स्वरूपों पर सर्वोच्च और उन सभी पर शासन करने वाला, विचारों की अपनी प्रणाली,
अपने सभी विशाल निर्माण का जीवन और प्रकाश का केंद्रीय सूर्य है; और मनुष्य दिव्य मन के लिए
सहायक है।

2. 475 : 5 *केवल*, 7-9, 14-22

सवाल. — आदमी क्या है?
पवित्रशास्त्र हमें सूचित करता है कि मनुष्य परमेश्वर की छवि और समानता में बना है। ... वह ईश्वर का यौगिक विचार है, जिसमें सभी सही विचार शामिल हैं; भगवान की छवि और समानता को दर्शाता है कि सभी के लिए सामान्य शब्द; विज्ञान में पाई जाने वाली सचेत पहचान, जिसमें मनुष्य ईश्वर या मन का प्रतिबिंब है, और इसलिए शाश्वत है; जो परमात्मा से अलग नहीं है; जिसे देवता से एक भी गुण नहीं मिला है; जो अपने आप में कोई जीवन, बुद्धिमत्ता और न ही रचनात्मक शक्ति रखता है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से वह सब कुछ दर्शाता है जो उसके निर्माता का है।

3. 429 : 12-13

विज्ञान घोषित करता है कि मनुष्य माइंड के अधीन है।

4. 480 : 10-18

चेतना, साथ ही साथ क्रिया, मन द्वारा शासित होती है, - ईश्वर में है, जो कि सभी विज्ञानों के मूल और राज्यपाल से पता चलता है। भौतिक ज्ञान का अपना क्षेत्र असत्य में विज्ञान से अलग है। आत्मा, ईश्वर से सामंजस्यपूर्ण कार्रवाई इनहार्मनी का कोई सिद्धांत नहीं है; इसकी कार्रवाई त्रुटिपूर्ण है और मनुष्य को मामले में होने का संकेत देती है। अन्तःकरण बुद्धि या आत्मा के प्रभाव के साथ-साथ इस कारण को भी महत्वपूर्ण बना देगा, इस प्रकार मन को ईश्वर से अलग करने का प्रयास।

5. 400 : 26-28

तथाकथित नश्वर मन की क्रिया को होने के सद्भाव को बाहर लाने के लिए दिव्य मन द्वारा नष्ट किया जाना चाहिए।

6. 147 : 32-6

यीशु ने कभी भी बीमारी को खतरनाक या चंगा करने की बात नहीं की। जब उनके छात्र उनके पास एक ऐसा मामला लाए, जिसे वे ठीक करने में विफल रहे, तो उन्होंने उनसे कहा, "ओ विश्वासहीन पीढ़ी," यह कहते हुए कि चंगा करने की अपेक्षित शक्ति मन में थी। उन्होंने कोई दवा नहीं निर्धारित की, भौतिक कानूनों के लिए कोई आज्ञाकारिता का आग्रह नहीं किया, लेकिन उनके लिए प्रत्यक्ष अवज्ञा का कार्य किया।

7. 411 : 13-19

यह दर्ज है कि एक बार यीशु ने एक बीमारी का नाम पूछा, - एक बीमारी जिसे आधुनिक लोग मनोभ्रंश कहते हैं। दानव, या दुष्ट, ने जवाब दिया कि उसका नाम लीजन था। उसके बाद यीशु ने बुराई को खत्म कर दिया, और पागल आदमी को बदल दिया गया और सीधे पूरे हो गए। इंजील आयात करने के लिए लगता है कि यीशु ने बुराई को आत्म-देखा और इसलिए नष्ट कर दिया।

8. 414 : 4-14

पागलपन का उपचार विशेष रूप से दिलचस्प है। हालांकि मामले में बाधा है, यह सच्चाई की सलामी कार्रवाई के लिए अधिकांश रोगों की तुलना में अधिक आसानी से उपज देता है, जो त्रुटि का प्रतिकार करता है। पागलपन का इलाज करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दलीलें अन्य बीमारियों की तरह ही हैं: अर्थात्, वह असंभावना, जो मस्तिष्क, मस्तिष्क को नियंत्रित या विचलित कर सकती है, पीड़ित या पीड़ित कर सकती है; यह भी तथ्य कि सत्य और प्रेम स्वस्थ राज्य, मार्गदर्शक और शासित नश्वर मन या रोगी के विचार को स्थापित करेंगे, और सभी त्रुटि को नष्ट कर देंगे, चाहे इसे मनोभ्रंश, घृणा, या कोई अन्य कलह कहा जाए

9. 143 : 26-27, 31-4 (से ,)

मन भव्य रचनाकार है, और इसके अलावा कोई शक्ति नहीं हो सकती है जो कि मन से ली गई है। ... चिकित्सा के हीन और अस्वाभाविक तरीके माइंड और ड्रग्स को ठोस बनाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन दोनों वैज्ञानिक रूप से घुलमिल नहीं पाएंगे। हम उन्हें ऐसा करने की इच्छा क्यों करें, क्योंकि इससे अच्छा कोई नहीं आ सकता है?

यदि मन सबसे महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है, तो हमें माइंड पर भरोसा करने की आवश्यकता है, जिसे निम्न शक्तियों के सहयोग की आवश्यकता नहीं है,

10. 408 : 14-27

शुद्धिकरण और मादक पदार्थों के उपयोग से हम जिस दमन को पागलपन को ठीक कर सकते हैं, वह अपने आप में पागलपन की एक हल्की प्रजाति है। क्या ड्रग्स मस्तिष्क में अपने स्वयं के समझौते पर जा सकते हैं और अव्यवस्थित कार्यों की तथाकथित सूजन को नष्ट कर सकते हैं, इस प्रकार पदार्थ के माध्यम से नश्वर मन तक पहुंच सकते हैं? ड्रग्स एक लाश को प्रभावित नहीं करते हैं, और सत्य रक्त के माध्यम से दवाओं को वितरित नहीं करता है, और उनमें से बुद्धि और भावना पर एक माना जाता है। टैरसल जोड़ का एक अव्यवस्था मस्तिष्क के रूप में अवधारणात्मक रूप से पागलपन का उत्पादन करेगा, क्या यह नहीं था कि नश्वर दिमाग सोचता है कि मस्तिष्क के मुकाबले टार्सल संयुक्त संयुक्त रूप से दिमाग से कम अंतर से जुड़ा हुआ है। विश्वास को उलट दें, और परिणाम प्रत्यक्ष रूप से भिन्न होंगे।

11. 169 : 18-28

विज्ञान न केवल सभी बीमारियों की उत्पत्ति को मानसिक रूप से प्रकट करता है, बल्कि यह भी घोषणा करता है कि सभी रोग दिव्य मन से ठीक हो जाते हैं। इस माइंड को छोड़कर कोई भी उपचार नहीं हो सकता है, हालांकि हम एक दवा या किसी अन्य साधन पर भरोसा करते हैं जिसके लिए मानव विश्वास या प्रयास का निर्देशन किया जाता है। यह नश्वर मन है, कोई फर्क नहीं पड़ता, जो बीमार को लाता है जो कुछ भी अच्छा लगता है वह भौतिकता से प्राप्त कर सकता है। लेकिन दैवीय शक्ति के माध्यम से बीमारों को वास्तव में ठीक नहीं किया जाता है। केवल सत्य, जीवन और प्रेम की क्रिया सद्भाव दे सकती है।

12. 371 : 27-32

दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके “हर तिनका को पूरा” कर सकते हैं।

13. 201 : 7 (सत्य)-12

सत्य एक नया प्राणी बनाता है, जिसमें पुरानी चीजें गुजर जाती हैं और "सभी चीजें नई हो जाती हैं।" जुनून, स्वार्थ, झूठी भूख, घृणा, भय, सभी कामुकता, आध्यात्मिकता के लिए उपज, और होने का अतिरेक ईश्वर की तरफ है। , अच्छा।

14. 417 : 10-18

क्रिश्चियन साइंस के तथ्यों को बनाए रखें, - कि आत्मा ईश्वर है, और इसलिए बीमार नहीं हो सकता; जो बात है उसे बीमारी नहीं कहा जा सकता है; आध्यात्मिक कार्य के माध्यम से कार्य करने का सारा कारण माइंड है। फिर सत्य और प्रेम की अनकही समझ के साथ अपनी जमीन पकड़ें, और आप जीतेंगे। जब आप अपनी दलील के खिलाफ गवाह को चुप कराते हैं, तो आप सबूत को नष्ट कर देते हैं, क्योंकि बीमारी गायब हो जाती है।

15. 205 : 32-3

जब हम दिव्य के साथ अपने संबंध को पूरी तरह से समझते हैं, तो हमारे पास कोई अन्य मन नहीं हो सकता है, लेकिन उनका - कोई अन्य प्रेम, ज्ञान, या सत्य, जीवन का कोई अन्य अर्थ नहीं है, और पदार्थ या त्रुटि के अस्तित्व की कोई चेतना नहीं है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6